■ संपादकीय

मजबूत राष्ट्र के लिए

लोकसभा चुनाव में बीजेपी की ऐतिहासिक जीत सुनिश्चित करके भारतीय मतदाता ने एक ऐसी मजबूत सरकार के लिए जनादेश दिया है, जो आतंकवाद और सुरक्षा के मुद्दों पर सख्त फैसले ले सके। इस क्रम में बीजेपी अकेले दम पर अपना एक कार्यकाल पूरा करके दूसरी बार सत्ता में आने वाली पहली गैर-कांग्रेसी पार्टी बन गई है। नेहरू युग के बाद किसी प्रधानमंत्री के पक्ष में जनता ने ऐसा भरोसा पहली बार ही दिखाया है। याद करें तो नरेंद्र मोदी से पहले यह गौरव इंदिरा गांधी को भी नहीं हासिल हो पाया था। न सिर्फ बीजेपी बल्कि उसके तमाम सहयोगी दलों ने मोदी के नाम पर ही वोट मांगे। दरअसल, भारत में एक मजबूत नेता की छवि लोगों के लिए काफी मायने रखती है। मोदी के बरक्स विपक्ष का कोई भी नेता मतदाताओं की इस कसौटी पर खरा नहीं उतर सका। पिछले पांच सालों में सरकार की कई नीतियों पर विपक्ष ने सवाल उठाए, उसके कुछ कदमों का प्रबल विरोध हुआ लेकिन इसके बावजूद सरकार के प्रति लोगों का भरोसा नहीं टूटा। ऐसा शायद इसलिए हुआ कि नोटबंदी जैसे एकाध अवसरों को छोड़कर आमजन का जीवन कुल मिलाकर स्थिर रहा। सरकार के कार्यकाल के दौरान खान-पान और रोजमर्रा की अन्य जरूरी चीजें एक सीमा से ज्यादा महंगी नहीं हुईं। साधारण जनता को प्रभावित करने वाली कई स्कीमें भी जमीन पर उतरीं और लोगों को उसका फायदा मिला। जैसे किसान सम्मान निधि के तहत जरूरतमंदों तक पैसे पहुंचे। उज्ज्वला योजना के तहत कमजोर वर्ग के लोगों को बड़े पैमाने पर गैस कनेक्शन मिले। स्वच्छ भारत के तहत शौचालय निर्माण योजना का लाभ भी हर किसी को बराबर मिला। लेकिन सबसे ऊपर राष्ट्रवाद का मुद्दा रहा। आतंकवाद को लेकर मोदी सरकार के आक्रामक स्टैंड और सर्जिकल स्ट्राइक तथा एयर स्ट्राइक की कार्रवाइयों ने जनता को अपने राष्ट्रीय शत्रु पर जीत का एक मनोवैज्ञानिक संतोष दिया और लोगों में राष्ट्रीय स्वाभिमान का भाव जगाया। लोगों में यह उम्मीद पैदा हुई है कि नरेंद्र मोदी की अगुआई में भारत दुनिया के एक ताकतवर देश के रूप में उभर सकता है। इन सारे पहलुओं को ध्यान में रखते हुए लोगों ने जाति-धर्म और क्षेत्र के आग्रहों से ऊपर उठकर बीजेपी को वोट दिया।

आचरण में नजर आये राजनीतिक ईमानदारी

शायद धूमिल ने ही लिखा था, `मुझे अपनी कविताओं के लिए दूसरे प्रजातंत्र की तलाश है।' पता नहीं इस पंक्ति की उत्प्रेरक कौन-सी स्थितियां थीं, पर यह अनुमान लगाना कठिन नहीं है कि हमारे समय का वह महत्वपूर्ण कवि जनतंत्र की किन विफलताओं से परेशान होगा। यह सही है कि सात दशक से भी अधिक समय हो गया हमें जनतांत्रिक प्रणाली से अपना कामकाज चलाते हुए, और यह भी सही है कि अपने आसपास के और दूरदराज के भी, कई देशों की तुलना में हमारा जनतंत्र कई-कई कसौटियों पर खरा उतरा है। अभी-अभी हमने अपनी सत्रहवीं लोकसभा का चुनाव संपन्न किया है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है हमारा देश।

विश्वनाथ सचदेव

पिछले सत्तर सालों में जिस तरह हमने अपने आपको जनतंत्र के लिए उपयुक्त बनाया है और जिस तरह शांतिपूर्ण तरीके से हमारे यहां शासन बदले हैं, वह जनतंत्र में हमारी आस्था को ही प्रमाणित करता है। लेकिन जनतंत्र का मतलब सिर्फ चुनाव होना ही नहीं है और न ही अधिकाधिक नागरिकों का निष्ठापूर्वक चुनाव में भाग लेना ही इस बात का प्रमाण है कि हमारा जनतंत्र परिपक्व हो गया। हर चुनाव में बहुत कुछ दांव पर लगता है और इस बहुत कुछ में जनतांत्रिक व्यवस्था का निरंतर मज़बूत होना और मज़बूत दिखना भी शामिल है। जनतंत्र के मज़बूत होने का मतलब समूची जनतांत्रिक व्यवस्था का मज़बूत होना है। इस व्यवस्था में वे सारी संस्थाएं तो शामिल हैं ही जो जनतंत्र को अर्थवान बनाती हैं, इनके साथ-साथ जनतांत्रिक मूल्यों-आदर्शों में जनता का विश्वास भी शामिल होता है। जिस उत्साह के साथ देश के नागरिकों ने चुनाव प्रक्रिया में हिस्सा लिया है, वह इस बात का संकेत तो देता है कि जनतंत्र में हमारा विश्वास डिगा नहीं है, पर बहुत कुछ ऐसा भी हुआ है इस चुनाव में जो जनतंत्र के भविष्य के प्रति आशंकाएं पैदा करता है। यह भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि जनतांत्रिक मूल्यों और जनतांत्रिक व्यवस्था, संस्थाओं में हमारा कितना विश्वास है।

जनतंत्र को मोटे तौर पर चार हिस्सों में बांटा जा सकता है! विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका और मीडिया, जिसे खबरपालिका भी कह सकते हैं। जनतंत्र का स्वास्थ्य इन चारों के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। इन चारों की स्वतंत्रता और सक्षमता जनतंत्र की सफलता की बुनियादी शर्त है। ज़रूरी है कि ये चारों पूरी

स्वतंत्रता और तत्परता के साथ अपना-अपना काम करते हुए दिखें। ज़रूरी यह भी है कि जनतांत्रिक संस्थाओं को अपना-अपना काम करने का अवसर और आज़ादी मिले। इसलिए सिर्फ शांतिपूर्ण मतदान होना ही पर्याप्त नहीं है, यह भी दिखना ज़रूरी है कि जनतांत्रिक संस्थाएं और जनतांत्रिक मूल्य सुरक्षित हैं। आइए देखें कि इन चुनावों में हम इस संदर्भ में कितने जागरूक रहे हैं अथवा जनतांत्रिक मूल्यों, आदर्शों का कितना और कैसा पालन किया है हमने। पहले कुछ बुनियादी संस्थाओं की बात कर ली जाये। कुछ वित्तीय संस्थाएं, चुनाव आयोग जैसे संस्थान, आयकर और प्रवर्तन निदेशालय जैसे विभाग तभी अपना दायित्व पूरा कर सकते हैं जब वे पूरी स्वतंत्रता के साथ अपना कार्य कर सकें और स्वतंत्रता के साथ काम करते हुए दिखें भी। लेकिन हमने देखा है कि इन संस्थाओं पर भी पक्षपातपूर्ण तरीके से काम करने के आरोप लगे हैं। इनके कार्य से प्रभावित होने वाले राजनीतिक दलों और राजनेताओं ने इस आशय के आरोप लगाये हैं। राजनीतिक उद्देश्यों से आयकर विभाग और प्रवर्तन निदेशालय जैसे संस्थानों द्वारा छापे डलवाये गये हैं। कतई ज़रूरी नहीं है कि ये आरोप सही ही हों, लेकिन यह नितांत ज़रूरी है कि इस तरह के आरोपों की तत्काल जांच हो और यह स्पष्ट किया जाये कि इन और ऐसी संस्थाओं का राजनीतिक उद्देश्यों से दुरुपयोग नहीं हो रहा।

लेकिन इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण पक्ष हमारे राजनीतिक दलों के आचरण का है। राजनीतिक दलों और राजनेताओं से भी यह आशा और अपेक्षा की जाती है कि वे जनतांत्रिक मूल्यों और आदर्शों का पालन करेंगे। एक राजनीतिक ईमानदारी उनके आचरण में दिखनी चाहिए। पर दुर्भाग्य से, हमारे जनतंत्र की सबसे प्रमुख असफलताओं में से एक यही राजनीतिक ईमानदारी का अभाव है। हम पहले भी देखते रहे हैं, और इस चुनाव में भी इस बात के ढेरों उदाहरण मिले हैं कि हमारे राजनीतिक दलों के आचरण में इस ईमानदारी का होना कतई ज़रूरी नहीं समझा जाता। दलीय प्रतिबद्धता की बात तो होती है, पर इस बात की चिंता किसी को नहीं दिखती कि इस प्रतिबद्धता के साथ कुछ मूल्य, सिद्धांत और विश्वास भी जुड़े होते हैं।

हमारे राजनीतिक दलों को इन मूल्यों, सिद्धांतों और विश्वासों की धज्जियां उड़ाने में तनिक भी संकोच नहीं होता। हर राजनीतिक दल यह घोषणा करता है कि वह कुछ बुनियादी मूल्यों और आदर्शों के अनुरूप कार्य करता है, पर व्यवहार में ये सारी बातें एक तरफ धरी रह जाती हैं और येन-केन-प्रकारेण चुनाव जीतना इन सब पर भारी पड़ जाता है। आज किसी व्यक्ति विशेष को पार्टी में शामिल किया जाता है और अगले ही दिन उसे चुनाव में प्रत्याशी बना दिया जाता है। यह देखने की आवश्यकता भी किसी को महसूस नहीं होती कि कल तक यह व्यक्ति पार्टी को गालियां दे रहा था। उसकी पृष्ठभूमि को देखना भी ज़रूरी नहीं समझा जाता। राजनीतिक दलों के लिए ज़रूरी सिर्फ यह देखना होता है कि व्यक्ति के चुनाव जीतने की संभावना कितनी है।

ऐसे अनेक उदाहरण इस चुनाव में हमने देखे हैं। शायद ही कोई दल ऐसा होगा जो राजनीतिक बेईमानी के इस उदाहरण से बचा हुआ हो। मूल्यहीन राजनीति का इससे बड़ा और उदाहरण क्या हो सकता है कि ऐसा कोई उम्मीदवार राष्ट्रपिता को अपमानित करता है और देश का सबसे बड़ा नेता माने जाने वाला व्यक्ति यह कहकर अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेता है कि 'मैं इसे मन से कभी माफ नहीं कर सकूंगा!' सवाल माफ करने का है भी नहीं, सवाल हमारी राजनीति में आये विकारों को दूर करने के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का है।

छात्रों को भी व्यवस्था का हिस्सा मानिए

जगमति सांगवान

रोहतक की स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ विजुअल एंड परफार्मेंस (सूपवा) हाल में अपने 14 छात्रों को निष्कासित करने व उनको कैंपस में न घुसने देने के विवादों में घिरी है। ऐसा ही प्रकरण कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी में भी हुआ था, जिसे छात्रों ने 9 दिन की भूख हड़ताल करके वापस करवाया था। दोनों ही जगहों पर नीतिगत फैसलों पर उठाए गए सवालों पर छात्रों को 'वे होते कौन हैं यह सवाल करने वाले' नजरिये व स्थिति से निपटने के रुझान मूल कारण नजर आते हैं। अन्य विश्वविद्यालय भी इस प्रकार के प्रश्नों पर कमोबेश ऐसे ही रुझानों के शिकार पाए जा रहे हैं जो विश्वविद्यालयों व शिक्षा की मूल भावना के विपरीत है। फिलहाल मसला सूपवा का है। इसे 2011 में हरियाणा राज्य के एक्ट द्वारा स्थापित किया गया था। शुरू में इसका नाम स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ परफॉर्मिंग एंड विजुअल आर्ट्स रखा गया। बाद में पंडित लख्मीचंद जी का नाम भी इसके साथ जोड़ दिया गया। विवाद का मूल कारण है विश्वविद्यालय प्रशासन इस सत्र से मास कम्यूनिकेशन विषय में एमए की 30 सीटों के साथ शुरू करना चाहता है। यह विषय शुरू से यूनिवर्सिटी के मूल पाठ्यक्रमों का हिस्सा नहीं रहा है और यूनिवर्सिटी द्वारा पहले से चलाए जा रहे कोर्सों के लिए ढांचागत सुविधाएं व बजट बहुत कम पड़ रहा है। छात्रों का कहना है कि इसकी वजह से फिल्म और टेलीविजन संबंधी कोर्सेज लेट हो रहे हैं और बजट की कमी से उनकी गुणवत्ता भी प्रभावित हो रही है। जिसके निहितार्थ हैं कि विद्यार्थियों को परीक्षाएं होने और डिग्रियां मिल जाने मात्र को लेकर भारी अनिश्चितता से गुजरना पड़ रहा है। पास आउट होने वाले छात्रों के लिए रोजगार के जो भी सीमित अवसर होते हैं, वे भी हाथ से निकल जाते हैं। विगत में भी विद्यार्थियों को बार-बार आंदोलन के माध्यम से अपनी बात कहनी पड़ी है। अलग प्रकृति के कोर्सों को शुरू करने की चेष्टा हो रही है, जिससे विद्यार्थियों का शंकित होना स्वाभाविक है। चाहिए तो यह कि पहले से चलने वाले कोर्सों में गुणवत्ता का पुट बढ़ाया जाए ताकि यहां से निकलने वाले छात्रों की योग्यता बढ़े व उन्हें अच्छे रोजगार मिल सकें। छात्रों की तो बात छोड़िए, शिक्षकों तक को नहीं पता कि आखिर एमए इन मास कम्यूनिकेशन एकदम प्रशासन की इतनी प्राथमिकता पर कैसे आ गई कि उसे अचानक से शुरू किया जा रहा है। टीचर तो मुखर रूप से बोल नहीं पा रहे परंतु विद्यार्थी, जिनका भविष्य दांव पर है, वे भला क्यों चुप रहेंगे। विश्वविद्यालय प्रशासन कोर्ट गया और यूनिवर्सिटी के 250 मीटर के घेरे में धरने-प्रदर्शन न करने का ऑर्डर ले आया।

खेल

कोहली, मॉर्गन और फिंच हो सकते हैं वर्ल्ड कप के बेस्ट कैप्टन : बॉर्डर

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज क्रिकेटर एलन बॉर्डर ने उम्मीद जताई है कि 30 मई से इंग्लैंड में शुरू हो रहे आईसीसी एकदिवसीय वर्ल्ड कप में विराट कोहली, इयोन मोर्गन और आरोन फिंच सर्वश्रेष्ठ कप्तान साबित हो सकते हैं। ऑस्ट्रेलिया को 1987 में अपनी कप्तानी में विश्व चैम्पियन बनाने वाले इस खिलाड़ी ने कहा कि आक्रामक शैली और तुरंत जवाब देने का कप्तानी कौशल कोहली को मोर्गन और फिंच से अगल तरह का कप्तान बनाता है।

विरोधी टीम को आक्रामक अंदाज में जवाब देने को तैयार रहते हैं कोहली बॉर्डर ने क्रिकेट डॉट कॉम डॉट एयू से कहा, ''मुझे लगता है कि विराट कोहली एक अलग प्रकार के कप्तान हैं। वह थोड़े आक्रामक किस्म के खिलाड़ी हैं और विरोधी टीम को उसी के अंदाज में जवाब देने के लिए तैयार रहते है।'' उन्होंने कहा, ''विरोधी खिलाड़ी को पता होता है कि अगर वह ऐसे कप्तान से भिड़ेंगे तो उन्हें तुरंत जवाब मिलेगा।'' ऑस्ट्रेलिया के 178 मैचों में कप्तानी करने वाले बॉर्डर, मोर्गन से भी काफी प्रभावित हैं, जिनके नेतृत्व में इंग्लैंड एकदिवसीय क्रिकेट के शिखर पर पहुंचा है।

इंग्लैंड टीम की गेंदबाजी किसी को भी दबाव में ला सकती है : उन्होंने कहा, ''मुझे लगता है कि इंग्लैंड की टीम असाधारण रूप से अच्छा कर रही हैं। वे अलग तरह की योजना के साथ खेल रहे हैं। यह देखना दिलचस्प होगा कि वर्ल्ड कप में उनकी योजना क्या करिश्मा दिखाती है। वह एक खतरनाक टीम हैं और उनकी गेंदबाजी किसी को भी दबाव में ला सकती है।'' बाएं हाथ का 63 साल का यह पूर्व कप्तान मुश्किल परिस्थितियों में फिंच की नेतृत्व क्षमता से प्रभावित है। उन्होंने कहा, ''आरोन फिंच शानदार काम कर रहे हैं। टीम से उन्हें अच्छा साथ मिल रहा है और मुझे लगता है कि यह उनकी कप्तानी में दिख रहा है। टीम में हर किसी को अपनी जिम्मेदारी का एहसास है।''

तीरंदाजी: भारतीय पुरुष टीम ने वर्ल्ड कप में जीता ब्रॉन्ज मेडल

अंताल्या (तुर्की)। भारतीय पुरुष टीम ने यहां जारी तीरंदाजी वर्ल्ड कप के चरण-3 में शनिवार को ब्रॉन्ज मेडल जीत लिया। अमन सैनी, अभिषेक वर्मा और रजत चौहान की पुरुष कंपाउंड टीम ने रूस को मात देकर ब्रॉन्ज जीता। भारतीय टीम ने कुल 235 का स्कोर किया जबकि रूस की टीम 230 अंक ही हासिल कर पाई। टूर्नमेंट के ब्रॉन्ज मेडल मुकाबले में भारतीय महिला टीम को ब्रिटेन से हार का सामना करना पड़ा। ब्रिटेन की टीम ने 2 अंकों से मात देकर ब्रॉन्ज जीता। भारतीय टीम मुकाबले में 226 स्कोर ही बना पाई जबकि ब्रिटेन ने 228 का स्कोर किया।

मुंबई के खिलाड़ियों ने रणजी ट्रॉफी में डीआरएस की मांग की

मुंबई। मुंबई के सीनियर खिलाड़ी आदित्य तारे और सूर्यकुमार यादव ने अंतरराष्ट्रीय मैचों और इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की तर्ज पर रणजी मैचों में अंपायर के फैसले की समीक्षा प्रणाली (डीआरएस) लागू करने की मांग की। हाल में मुंबई में रणजी टीमों के कप्तानों की बैठक में भी डीआरएस लागू करने के साथ टॉस प्रकिया को खत्म करने के सुझाव दिए गए थे।

31 वर्षीय तारे ने शनिवार को यहां पत्रकारों से कहा, 'हां बिल्कुल, अगर ऐसा होता है तो यह एक शानदार कदम होगा। इसकी जरूरत भी है। अगर आपके पास तकनीक है तो आप इसका उपयोग कर सकते हैं।' तारे के साथ यहां एक स्टोर के लॉन्च के लिए पहुंचे सूर्यकुमार यादव ने भी तकनीक के इस्तेमाल की वकालत की। उन्होंने कहा, 'तारे ने सही कहा, अगर आपके पास तकनीक है और आप उसका इस्तेमाल कर सकते तो करना चाहिए। हमने देखा है कि काफी गलतियां होती हैं और हम इंसान है और इंसानों से गलतियां हो जाती हैं।'

माधुरी दीक्षित ने जीन और वैजयंतीमाला से प्रेरणा ली

डांस दीवान का प्रीमियर जल्द ही कलर्स पर

कलर्स के लोकप्रिय डांस रियलिटी शो, डांस दीवाने ने एक और श्रृंखला के लिए तैयार होना शुरू कर दिया है। इस शो में, विभिन्न उम्र के महत्वाकांक्षी मनोरंजन डांसर्स को अपने नृत्य कौशल पर जोर दिया है। प्रसिद्ध हस्तियों के प्रसिद्ध पैनलिस्ट, यानी नृत्य दिवा माधुरी दीक्षित, निर्देशक शशांक खेतान और प्रसिद्ध कोरियोग्राफर तुषार कालिया नृत्य की महत्वाकांक्षा का पता लगाएंगे और उन्हें प्रोत्साहित करेंगे। माधुरी दीक्षित, अनुग्रह का एक आदर्श उदाहरण, हाल ही में इस शो के लिए एक संगीत वीडियो के लिए शूट किया।

जब उसने अपने दिल का राज उजागर किया, तो उसने बताया कि वह जीन और वैजयंतीमाला के साथ काम करना चाहती थी। जीन केली को ऐनी अमेरिकन इन पेरिस और एंकर अवेई जैसे शास्त्रीय कार्यों के लिए जाना जाता है और पुरस्कार विजेता है। अभिनेत्री इस तरह मंच पर प्रदर्शन करना चाहती है और एक संगीत नाटक में उसके निर्देशन में काम करती है। इसके अलावा, उन्हें पहली महिला सुपरस्टार वैजयंतीमाला माना जाता है, जिसने भारतीय सिनेमा में नृत्य के मानक और शैली को पूरी तरह से बदल दिया है।

सूत्रों के अनुसार, माधुरी दीक्षित ने हमें बताया कि जीवन में एक बार उनके साथ काम करने का सपना किसी भी नर्तक का हो सकता है। वे नृत्य की प्रतिष्ठा और मान्यता पाने वाले पहले व्यक्ति थी। माधुरी को लगता है कि वह एकमात्र नृत्य है, जिसने उन्हें अपने नृत्य के रंगमंच में प्रेरणा दी है।

तुषार कालिया ने कोरियोग्राफ शो के लिए माधुरी दीक्षित के संगीत वीडियो के लिए शूटिंग की है। इस वीडियो में सभी उम्र और उनकी प्रतिभा के लिए प्रतियोगिता के कुछ स्निपेट्स दिखाए गए हैं। यह दूसरा सीजन निश्चित रूप से दिलचस्प होने वाला है और नृत्य का स्तर अभी भी ऊंचा है।

हॉटस्टार स्पेशल्स के नये क्राइम थ्रिलर 'होस्टेजेज' में नजर आयेंगे रोनित रॉय और टिस्का चोपड़ा

मुंबई। भारत के सर्वश्रेष्ठ कथाकारों द्वारा आकर्षक कहानियों की पेशकश करने की अपनी प्रतिबद्धता को जारी रखते हुये हॉटस्टार स्पेशल्स ने आज अपने अगले शो - 'होस्टेजेज' को लॉन्च करने की घोषणा की है। इस सीरीज से बॉलीवुड के एक सबसे प्रसिद्ध फिल्मकार सुधीर मिश्रा डिजिटल डेब्यू कर रहे हैं। अप्लॉज एन्टरटेनमेंट द्वारा निर्मित इस शो में टिस्का चोपड़ा और रोनित रॉय जैसे दमदार कलाकार लीड किरदारों की भूमिका निभायेंगे। उनके साथ ही प्रवीण डबास, आशिम गुलाटी, मोहन कपूर, मल्हार राठौड़, शरद जोशी, सूर्या शर्मा, अनन्शा बिस्वास अन्य महत्वपूर्ण भूमिकाओं में नजर आयेंगे। इस सीरीज को आकृति गोयल, मधुरा डालिम्बकर, मयूर घोष, निसर्ग मेहता, शिवा बाजपेई, सूरज गियानानी ने लिखा है।

यह एक क्राइम थ्रिलर है। इसकी कहानी एक मशहूर सर्जन के इर्द-गिर्द घूमती है, जिसे अपने परिवार की जान के बदले मुख्यमंत्री की हत्या करने का आदेश दिया गया है। जाने-पहचाने किरदारों और बेहतरीन कहानी के साथ 'होस्टेजेज' में कई बार ऐसी असमंजस से भरपूर परिस्थितियां नजर आती हैं, जिसका सामना आपको मुश्किल हालात में करना पड़ सकता है। हॉटस्टार स्पेशल की प्रस्तुति 'होस्टेजेज' की स्ट्रीमिंग 31 मई से शुरू होगी और यह हॉटस्टार वीआइपी पर विभिन्न भारतीय भाषाओं में उपलब्ध होगा।

आसुस का रायपुर में एक्सक्लूसिव स्टोर लॉन्च

रायपुर। टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में दिग्गज कंपनी, आसुस इंडिया ने रायपुर, छत्तीसगढ़ में अपना अत्याधुनिक नया स्टोर लॉन्च करने की घोषणा की। नया आसुस एक्सक्लूसिव स्टोर इलेक्ट्रॉनिक्स और कंप्यूटर हार्डवेयर की विस्तृत रेंज के साथ तैयार है, जिसमें ब्रांड के प्रमुख उत्पाद जैसे कि वीवोबुक, ज़ेनबुक, ज़ेनबुक-फ्लिप और रिपब्लिक ऑफ गेमर्स (आरओजी) लैपटॉप शामिल हैं। ब्रांड का नया स्टोर श्री महावीर कम्प्यूटर्स, ब्लॉक-बी, शॉप नंबर -38, क्रिस्टल आर्केड, लोधी पारा चौक के पास, रायपुर में है।

आसुस इस वित्तीय वर्ष के अंत से पहले 100 स्टोर लॉन्च करने जा रहा है। नवीनतम आसुस एक्सक्लूसिव स्टोर रायपुर के कमर्शियल और व्यावसायिक जिले में स्थित है। यह स्टोर उपयोगकर्ताओं को ब्रांड के नवीनतम और प्रमुख प्रॉडक्ट्स तक आसान पहुंच प्रदान करेगा। इच्छुक ग्राहक स्टोर में आकर वीवोबुक, ज़ेनबुक, ज़ेनबुक-फ्लिप और रिपब्लिक ऑफ गेमर्स (आरओजी) लैपटॉप सहित आसुस के नवीनतम प्रॉडक्ट्स् के बारे में जानकारी ले सकते हैं।

अर्नोल्ड सु, बिजनेस डेवलपमेंट मैनेजर (पीसी एंड आरओजी), आसुस इंडिया के अनुसार - रायपुर, छत्तीसगढ में आसुस स्टोर के लॉन्च की घोषणा करते हुए बेहद खुश हैं। नए स्टोर लॉन्च के साथ, हमने इस वित्त वर्ष के समापन से पहले 100 नए स्टोर खोलने की अपनी सोच पर सफलतापूर्वक काम किया है। आसुस इंडस्ट्री और ग्राहकों को भविष्यों की तकनीक का अनुभव देने के लिए रिटेल टेक्नोलॉजी को नये अंदाज में पेश कर रहा है। इच्छुक उपयोगकर्ता स्टोर में आकर आसुसके नवीनतम और अत्याधुनिक प्रॉडक्ट्स को देख-समझ सकते हैं।

आसुसएक्सक्लूसिव स्टोर्स के अलावा, आसुसरिलायंस डिजिटल और क्रोमा जैसे अन्य बड़े फॉर्मेट वाले स्टोर के जरिये भी ग्राहकों से मजबूत संपर्क बनाता है। इसके बढ़ते रिटेल नेटवर्क में भारत के 600 जिलों में फैले हजारों रिसेलर्स भी शामिल हैं। इसके अलावा, आसुसकी ऑनसाइट सर्विस भारत में 20,000 से अधिक डाक पिनकोड क्षेत्रों को कवर करती है। ऑफलाइन कनेक्ट के अलावा, आसुस ने सक्रिय रूप से पेटीएम मॉल और फ्लिपकार्ट जैसे ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के साथ मिलकर उन महत्वाकांक्षी उपयोगकर्ताओं तक पहुंचने के लिए काम किया है जो इंडस्ट्री के अग्रणी अत्याधुनिक नवीनतम प्रॉडक्ट्स खरीदने की इच्छा रखते हैं।